जन्म और कर्म

सब के सब
ब्रह्म से निकले

मुंह से ब्राह्मण
बांहों से क्षत्रिय
वैश्य जांघों से
पैरों से शूद्र निकले

अभेद से भेद की
शुरुआत हुई
पवित्र से छूआछूत की

मुंह बाहों से लड़े
बांहें जांघों से
जांघे पैरों से
सबके सब आपस में लड़े
टुकड़े-टुकड़े हुए
समाज के अंग

फिर मुंह बांहों से मिलकर
जगत को भकोसते और कोसते रहे
जांघें और पैर हाथों से
मेहनत कर
जगत को पालते-पोसते रहे। ◆

❑ गोरख पाण्डेय
प्रस्तुति : प्रभात